International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493, Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 02-02-2021, Accepted: 06-03-2021, Published: 14-04-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 04-06

श्रृंखला की कड़ियाँ'–नारी जीवन

डॉ. गरिमा पाण्डेय
पूर्व शोध–छात्रा, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो0वि0वि0, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

श्रृंखला की कड़ियाँ "महादेवी वर्मा के समस्या मूलक निबंधो का संग्रह है| स्त्री विमर्श इनमे प्रमुख है | इसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में नारी की दशा दिशा एवं संघर्षो पर महादेवी जी ने अपनी लेखनी चलायी है | इसमें भारतीय नारी की विषम परिस्थिति को अनेक दृष्टि बिंदु से देखने का प्रयासकिया गया है| महादेवी जी नारी चेतना की भारतीय परंपरा पर विचार करने वाली अद्‌वितीय विचारक रही है | उनके विचार रेखाचित्रों से होकर "श्रृंखला की कड़ियाँ" बनकर हमारे सामने उभर आते है | 'श्रृंखला की कड़ियाँ ' नारी समस्याओं का जीवंत विवेचन ही है | इसमें महादेवी जी ने विषम समाज में नारी की दयनीय स्तिथि का वर्णन किया है | 'श्रृंखला की कड़ियाँ ' का मूल आधार नारी वेदना है

मुख्य शब्द: विषम समाज में नारी की दयनीय स्तिथि और नारी वेदना है |

प्रस्तावना

''श्रृंखला की कड़ियाँ' में महादेवी जी ने भारतीय नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। इसमें भारतीय नारी की पराधीनता की प्रत्येक स्थिति की पहचान है और उससे मुक्ति की राहों की खोज की चिंता भी है। इस रचना में महादेवी जी ने अपमानित, प्रताड़ित अधिकारहीन तथा व्यक्तित्वहीन भारतीय नारी के लिए मुक्ति की जंग छेड़ी है।

'श्रृंखला की कड़ियाँ ' का आधार ही नारी की वेदना है। नारी पर होने वाले अत्याचार, उसके दु:ख उसके बन्धन ये ही श्रृंखलाएं हैं और उन्हीं दुखों और अत्याचारों की परम्परा की कड़ियाँ हैं, महादेवी जी की 'श्रृंखला की कड़ियाँ '।

महादेवी जी ने नारी के करूणा क्रन्दन संतप्त हृदय को करीब से देखा है और उन्हीं नारियों के कष्टों को उन्होंने अपने इन निबन्धों में भाषा दी है। उन्होंने अधिकार वंचित नारी की दयनीय स्थिति का समयक विश्लेषण किया है।

'श्रृंखला की कड़ियाँ ' में उन्होंने कहा–

> ''उसके अधिकारों के सम्बन्ध में यह सत्य है कि वे भिक्षावृत्ति से न मिले हैं, न मिलेंगे, क्योंकि उनकी स्थिति आदान प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न हैं।''

''श्रृंखला की कड़ियाँ ' में महादेवी जी निम्न शीर्षकों के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करती हैं–हमारी श्रृंखला की कड़ियाँ युद्व और नारी, नारीत्व का अभिशाप, आधुनिक नारी, घर और बाहर, हिन्दू स्त्री का पत्नीत्व, जीवन का व्यवसाय स्त्री के अर्थ स्वातन्त्रय का प्रश्न, हमारी समस्यायें, समाज और व्यक्ति तथा जीवन जीने की कला।

भारतीय नारी के प्रति महादेवी जी का हृदय सहानुभूति से भरा हुआ है। उनके अनुसार अगर नारी दु:ख और निराशा से घिरी रही तो वह अपने जीवन का विकास कभी नहीं कर सकेगी। महादेवी जी का मन उन लोंगो के प्रति क्षुब्ध हैं, जो नारी के लिए श्रृंखला की कड़ियाँ बना गये हैं।

नारियों के स्थिति के विषय में महादेवी जी ने स्वंय लिखा है–

> ''सम्पत्ति के स्वामित्व से वंचित असंख्य स्त्रियों के सुनहले भविष्यमय जीवन, कीटाणुओं से भी तुच्छ माने जाते है, देख कौन सहृदय न रो देगा। चरम दुरावस्था के सजीवन निदर्शन हमारे यहाँ के सम्पन्न पुरूषों की विधवाओं और पैतृक धन के रहते हुए दरिद्र पुत्रियों का जीवन है।''

महादेवी जी की 'श्रृंखला की कड़ियाँ ', उस नारी को समर्पित है, जो जन्म से अभिशप्त जीवन से संतप्त हैं। समाज में विधवाओं की स्थिति के विषय में महादेवी जी ने स्वंय कहा है–

> ''यदि दुर्भाग्य से स्त्री के मस्तक का सिन्दूर धुल गया तब तो उसके लिए संसार ही नष्ट हो गया। यह ऐसा अपराध है, जिसके कारण उसे मृत्युदण्ड से भी भीषणतर दण्ड भोगते हुए तिल–तिल घुलकर जीवन के शेष युग न जाने वाले क्षण व्यतीत करने होते है।''

भारतीय समाज में ऐसे लोगों की कमी न पहले थी न आज है जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति की प्राचीनता की दुहाई देकर

भारतीय स्त्री को गुलाम बनाये रखना चाहते हैं। उन लोगों के सोच–विचार की आलोचना करते हुए महादेवी वर्मा कहती हैं–

''आज सब सारा गतिशील संसार निरन्तर परिवर्तन की अनिवार्यता प्रमाणित कर रहा है, स्त्रियों के जीवन को काट–छाँट कर उसी सांचे के बराबर बनाने का प्रयत्न हो रहा है जो प्राचीनतम युग में ढाला गया था।....प्राचीनता की दुहाई देकर जीवन को संकीर्णतम बनाते जाना और विकास के मार्ग को चारों ओर से अवरूद्ध कर लेना किसी जीवित व्यक्ति पर समाधि बना देने से भी अधिक क्रूर और विचारहीन कार्य है।

भारतीय नारी आज कैसी उपेक्षित, अपमानित, प्रताड़ित, अधिकारहीन, व्यक्तिहीन प्राणी है। हमें चारों तरफ नारी के दासता के प्रमाण मिलते हैं। भारतीय नारी से दयनीय प्राणी संसार में कठिनाई से मिलेगा। उसे न पुत्री के रूप में अधिकार प्राप्त हैं, न माता के रूप, न बहन के रूप में, न पत्नी के रूप में विधवा की जो स्थिति हमारे समाज में है, वह अकथनीय है। रूढ़ियों और बद्वमूल संस्कारों, धुँआती हुई अग्नि में जलते हुए नारी जीवन की चिराँध में साँस लेना कठिन है। स्त्री के बारे में हिन्दू समाज के रूढ़िवादी दृष्टिकोण और उसके परिणाम स्वरूप स्त्री की स्थाई पराधीनता की ओर संकेत करती हुई महादेवी जी ठीक ही कहती हैं कि–

''हिन्दू समाज ने उसे अपनी प्राचीन गौरव गाथा का प्रदर्शन–मात्र बनाकर रख छोड़ा है और वह भी मूक निरीह भाव से उसको वहन करती जा रही है। शताब्दियों पर शताब्दियाँ बीती चली जा रही हैं, समय की लहरों में परिवर्तन पर परिवर्तन बहते आ रहे है, परन्तु समाज केवल स्त्री को जिसे उसने दासता के अतिरिक्त और कुछ देना नहीं सीखा, प्रलय की उथल–पुथल में भी शिला के समान स्थिर देखना चाहता है। ऐसी स्थिरता मृत्यु का श्रृंगार हो सकती है, जीवन का नहीं।

महादेवी जी ने नारी–जीवन के उन अभिशापों का उद्घाटन किया है, जिन्होंने नारी जाति को युगों से मानवता का कलंक बना रखा है। उन्होंने अपने निबन्धों में युवा पीढ़ी की गिरती दशा पर भी गहरी चिन्ता व्यक्त की है।

नारी का समाज में इतना शोषण होता है कि वह बेचारी अपनी व्यथा में घुट–घुट कर एक पल खुशी की साँस लेने के इंतजार में अपना समय बिता देती है, नारी की दशा समाज में क्या है, इस विषय में महादेवी जी कहती हैं–

''सम्पत्ति के स्वामित्व से वंचित असंख्य स्त्रियों के सुनहले भविष्य जीवन कीटाणुओं से भी तुच्छ माने जाते देख कौन सहृदय रो न देगा? चरम दुरावस्था के सजीव निर्दशन हमारे यहाँ के सम्पन्न पुरूषों की विधवाओं और पैतृक धन के रहते हुए भी दरिद्र पुत्रियों के जीवन हैं, स्त्री पुरूष के वैभव की प्रदर्शनी मात्र समझी जाती है।

'श्रृंखला की कड़ियाँ ' इस बात का प्रमाण है कि विचार केवल ज्ञान की एकान्त साधना से पैदा नहीं होते। सामाजिक आन्दोलनों और जीवन के अनुभवों से विचारों का जन्म होता है। यही नहीं, सामाजिक आन्दोलन और जीवन के अनुभवों से पैदा होने वाले विचारों का स्वभाव एकान्त साधना से उपजे विचारों से भिन्न होता है। ग्राम्शी के अनुसार समाज में बुद्धिजीवी दो प्रकार के होते हैं, पेशेवर और आवयविक। प्रायः ज्ञान की एकान्त साधना करने वाले पेशेवर बुद्धिजीवी होते हैं, लेकिन जो किसी वर्ग समुदाय और समाज की जिन्दगी की वास्तविकताओं और आकांक्षाओं की व्याख्या करते हुए उस वर्ग, समुदाय और समाज को इतिहास में अपनी स्थिति समझने और उसे बदलने के लिए संघर्षरत करने की प्रेरणा देते हैं, वे आवयविक बुद्धिजीवी होते हैं।

'श्रृंखला की कड़ियाँ' की लेखिका भारतीय स्त्री समुदाय की आवयविक बुद्धिजीवी के रूप में हमारे सामने आती हैं। उसके विचारों के निर्माण में भारतीय समाज के अतीत और वर्तमान स्त्री जीवन की कठोर वास्तविकताओं के गम्भीर ज्ञान, जटिल स्थितियों की अचूक पहचान और लेखिका के अपने व्यापक जीवनुभवों की महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही उसमें भारतीय स्त्री की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पराधीनता से मुक्ति की गहरी चिन्ता है, इसलिए उनके विचारों में वैसी उदासीनता और निर्जीवता नहीं है, जैसी एकान्त साधना से उपजे विचारों में होती है। 'श्रृंखला की कड़ियाँ ' के विचारों में सघन भावावेग है और आक्रोश तथा प्रतिरोध भी।

'श्रृखला की कड़ियाँ ' तीसरे और चौथे दशक के उस नारी आन्दोलन की देन है, जिसमें महादेवी वर्मा सक्रिय रूप में सम्मिलित थीं, इसलिए उसमें उस समय की नारी चेतना के जागरण की अनुगूंजें हैं, उसकी शक्ति की, सीमाओं की और सम्भावनाओं की भी। महादेवी वर्मा के मन में भारतीय नारी की भावी स्वाधीनता का विश्वास है, लेकिन वे यह जानती हैं कि स्वाधीनता याचना से नहीं मिलती, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है।

वे कहती हैं–

''भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राणवेग से जाग सकें, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं। उसके अधिकारों के सम्बन्ध में यह सत्य है कि वे भिक्षावृत्ति से न मिले हैं, और न मिलेंगे, क्योंकि उनकी स्थिति आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न है।''

वे यह भी जानती हैं कि संघर्ष के लिए शक्ति और विवेक की आवश्यकता होती है। इसलिए वे कहती हैं कि 'हमारे अधिकार, हमारी शक्ति और विवेक सापेक्ष रहेंगे'।

महादेवी वर्मा दूसरे देशों की स्त्रियों की स्वाधीनता का उदाहरण सामने रखकर भारतीय स्त्री की पराधीनता पर क्षोभ व्यक्त करते हुए लिखती हैं–

''पश्चिमी तथा पूर्वी जागृत देशों में स्त्रियों ने उन बेड़ियों को काट डाला है, जिनमें पुरूषों ने बर्बरता के युग में उन्हें बांधकर अपने स्वामित्व का क्रूर प्रदर्शन किया था। जिसकी सभ्यता प्राचीनता प्रख्यात है, केवल उसी हमारे देश में अब इस भावना की ऐसी धुंधली रूपरेखा है कि हजार स्त्रियों में कदाचित एक भी इससे परिचित नहीं होगी।

महादेवी जी ने ये माना है कि प्राचीन काल से ही जो नारी अपने जीवन को तिल–तिल करके गलाती चली आई है, जो दूसरों की खुशियों के लिए अपने उल्लास, अपने सपनों को तिलांजलि देती आयी है, उसे कभी भी समाज का पुरूष वर्ग समझ नहीं पाया है। कभी भी उस पर गौर नहीं किया कि वो जो कर रहा है, क्या उचित है। अपने स्वाभिमान पर ठेस पहुँचने पर भी वे उफ तक नहीं करती । मगर उसके इन अद्भुत गुणों को कभी भी समाज में स्वीकार नहीं किया। उसके सरल, सहज गुण को समाज ने और पुरूष वर्ग ने उसकी दुर्बलता समझ लिया है। उन्होंने लिखा है–

''मनुष्य की साधारण दुर्बलता से युक्त दीन माता का वध करते हुए न पराक्रमी परशुराम का ह्रदय पिघला, न मनुष्यता की असाधारण गरिमा से गुरू–सीता को पृथ्वी में समाहित करते हुए राम का ह्रदय विर्दीण हुआ। मानों पुरूष–समाज के निकट दोनों जीवनों का एक ही मूल्य था। एक जीवित व्यक्ति का इतना कठोर त्याग, इतना निर्मम बलिदान दूसरा ह्रदयवान व्यक्ति इतने अकातर भाव स्वीकार कर सकता है, यह कल्पना भी क्लेश देती है, वास्तविकता का तो कहना ही क्या।

अपने 'श्रृंखला की कड़ियाँ ' में महादेवी जी ने नारी संवेदना के बौद्धिक एवं सामाजिक पक्ष का उद्घाटन किया है। रूढ़िवादी समाज और पुरूष–प्रधान परम्परावादी दृष्टिकोण का एक तेजस्वी नारी के द्वारा सांस्कृतिक सार पर तीव्र प्रतिवाद किया गया है। स्त्रियों के अधिकारों की लड़ाई में वे योद्धा की भाँति सक्रिय हुईं।

जो काम पुरूष–शक्ति को जागृत करने में 'राम की शक्ति पूजा' लिखकर निराला ने किया वही काम 'श्रृंखला की कड़ियाँ ' लिखकर महादेवी जी ने किया। उन्होंने कविता का सहारा लिया और एक अद्वितीय रचना लिखी, महादेवी जी ने गद्य का मार्ग अपनाकर नारी–जगत को भारतीय सन्दर्भ में मुक्ति का सन्देश दिया। राम भी वस्तुतः वंदिनी सीता की मुक्ति के लिए प्रयत्न कर रहे थे। महादेवी जी ने सीता सावित्री स्वरूपा इस देश की नारी को सामाजिक स्तर पर रूढ़ियों से मुक्त करने की घोषणा की।

महादेवी जी मध्यम वर्ग की स्त्री की दशा का वर्णन करते हुए यह बताना चाहती है कि इस वर्ग की स्त्रियाँ प्रायः जब अपने गृहस्थ की चौखट पर कदम रखती हैं तो उन्हें कदम–कदम पर सदैव ही उपेक्षा और अनादर मिलता है। किसी प्रकार का कोई भी सौभाग्य उनके भाग्य में नहीं होता है

महादेवी जी की ' श्रृंखला की कड़ियाँ ' ओज प्रधान विचार गद्य का नमूना है। उन्होनें चांद के सम्पादकीय में जो लेख लिखे वह 'श्रृंखला की कड़ियाँ ' में प्रकाशित हुईं ।

श्री अमृतराय ने महादेवी जी के गद्य साहित्य को दृष्टि में रखकर उनकी वेदनानुभूति के स्वरूप का विवेचन इन शब्दों में किया है–

''महादेवी जी का साहित्य मूलतः समाज केन्द्रित है। उसने समाज के दुःख, दैन्य, उसके स्वार्थो और अभिशापों का प्रतिकार किया है। उसमें एक विद्रोही की आत्मा रूदन कर रही है। उसका मूल उत्स अपनी पीड़ा में नहीं समाज में दिन–रात चलने वाले अन्यायों और अत्याचारों में है।

महादेवी जी ने अपने लेख के मूल विषय समाज तथा नारी के जिस दयनीय स्थिति का वर्णन किया है उस पर लेखक के साथ पाठक का मन भी तिलमिला उठता है।

वर्तमान समाज की स्थिति का विवरण प्रस्तुत करते हुए महादेवी जी का स्वर निराशावादी नहीं है। भविष्य में समाज उन्नत हो सकता है, इसकी आशा भी विद्यमान है।

संदर्भ सूची

1. डा० रामचन्द्र तिवारी हिन्दी गदय साहित्य पृ० सं० ६३४
2. महादेवी वर्मा – श्रृंखला की कडियॉ पृ० सं० ३०
3. डा० निर्मला सिंह महादेवी वर्मा का गदय साहित्य पृ० सं० ६८
4. महादेवी वर्मा श्रृंखला की कडियॉ पृ० सं० ४८
5. महादेवी वर्मा श्रृंखला की कडियॉ पृ० सं० १
6. महादेवी वर्मा श्रृंखला की कडियॉ पृ० सं० २१
7. महादेवी वर्मा श्रृंखला की कडियॉ (नारीत्व का अभिशाप) पृ० सं० ३५
8. महादेवी वर्मा श्रृंखला की कडियॉ पृ० सं० ८२
9. हादेवी वर्मा श्रृंखला की कडियॉ पृ० सं० ६८ दृ ६६
10. गदयकार महादेवी और नारी समस्याख लेखक अमृतराय पृ० सं० १३२